

## धार जिले में जनजातियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन

डॉ. चन्द्रपालसिंह सेन्धालकर

सहायक आचार्य (समाज शास्त्र)

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम यूनिवर्सिटी इंदौर

इंदौर, मध्य प्रदेश (भारत)

ईमेल - chandrapalsendalkar612@gmail.com

### सारांश:

धार जिले में निवास करने वाले जनजातिय समाज के परिवारों की पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन करने के अंतर्गत उस क्षेत्र में निवास करने वाले जनजाति समाज के लोगों से वहाँ की भौगोलिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति, उनकी आर्थिक स्थिति, राजनैतिक स्थिति, वहाँ के वातावरण की स्थिति, उनके समाज की स्थिति, गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के संचालन के बारे में एवं जनजाति समाज पर हो रहे प्रभाव की स्थिति की जानकारी के साथ-साथ कितने लोगों को गैर शासकीय संस्थाओं के माध्यम से विभिन्न योजनाओं का लाभ मिल रहा है। जनजाति समाज की महिलाएँ अपने घर की दीवारों पर पीली मिट्टी अथवा गोबर आदि से लीप-पोत कर सजा-संवारकर सुंदर बनाते हैं। जनजाति समाज के लोग एकल परिवार में रहना पसंद करते हैं। आज भी इन जनजाति समाज में परिवार का मुखिया पुरुष हैं जो कि अपने घर का मालिक होता है। जनजाति समाज के अधिकतर व्यक्ति या तो वे मजदूरी करते हैं या फिर अपना स्वयं का व्यवसाय (पशु पालन, मछली पालन)। जनजातिय समाज के ग्रामों में प्रत्येक ग्राम में प्रकृति की पूजा, वृक्ष पूजा, बाबादेव पूजा तथा बलि प्रथा आदि धार्मिक प्रथाएं प्रचलित हैं

कुंजी शब्द : झांझे, कवेलु, पशु पालन, दाह दिया, बाबादेव' ।

### प्रस्तावना

धार जिले में निवास करने वाले जनजातिय समाज के परिवारों की पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति के बारे में द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र में जाकर उस क्षेत्र में निवास करने वाले जनजाति समाज के लोगों से वहाँ की भौगोलिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति, उनकी आर्थिक स्थिति, राजनैतिक स्थिति, वहाँ के वातावरण की स्थिति, उनके समाज की स्थिति, गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के संचालन के बारे में एवं जनजाति समाज पर हो रहे प्रभाव की स्थिति की जानकारी के साथ-साथ कितने लोगों को गैर शासकीय संस्थाओं के माध्यम से विभिन्न योजनाओं का लाभ मिल रहा है और कितने लोगों को नहीं मिल रहा है आदि से संबंधित स्थिति की जानकारी अध्ययन क्षेत्र में जाकर वहाँ पर निवासरत जनजाति समाज के लोगों के द्वारा उनकी स्थिति के बारे में साक्षात्कार अनुसूची एवं प्रश्नावली के माध्यम से कुछ प्रश्न पूछे गये जिनका उत्तर उत्तरदाताओं के द्वारा प्रदान किये गये हैं। इसके साथ ही धार जिले में ऐसे कितने गैर शासकीय संगठन संस्थाएँ कार्य कर रही हैं, एवं इनके द्वारा कौन-कौन सी योजनाओं पर कार्य किया जा रहा है आदि की जानकारी धार जिले में कार्य करने वाले विभिन्न गैर संस्थाओं के कार्य स्थल पर जाकर उनसे जानकारी एकत्रित की एवं धार जिले में निवास करने वाले जनजाति

समुदाय इन संस्थाओं का क्या प्रभाव दिखाई दिया है एवं इन लोगों के दिनचर्या में कितना बदलाव देखने के मिला है आदि की जानकारी एकत्रित की गई है।

| मध्यप्रदेश के शीर्ष पांच अनुसूचित जनजाति जनसंख्या जिले (पूर्ण संख्या और प्रतिशत में) |                          |           |                            |
|--------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------|-----------|----------------------------|
| ज़िला                                                                                | अनुसूचित जनजाति जनसंख्या | ज़िला     | अनुसूचित जनजाति जनसंख्या % |
| धार                                                                                  | 12,22,814                | अलीराजपुर | 89%                        |
| बड़वानी                                                                              | 962145                   | झाबुआ     | 87%                        |
| झाबुआ                                                                                | 891818                   | बड़वानी   | 69.4%                      |
| छिंदवाड़ा                                                                            | 769778                   | डिण्डोरी  | 64.7%                      |
| वेस्ट निमाड़<br>(खरगोन)                                                              | 730169                   | मंडला     | 57.9%                      |

#### आवास की स्थिति:-

जनजाति समाज की आवास स्थिति के बारे में अध्ययन किया गया जो कि उसके रहने का स्थान होता है। उत्तरदाता के पास कैसा मकान है, वहाँ किस परिवार से संबंधित है। जनजाति समाज में आवास व्यवस्था अच्छे स्तर की देखी गई है। जनजाति समाज की महिलाएँ अपने आवास को थोड़ा सजा-संवारकर रखती है। इस समाज की महिलाओं के द्वारा अपने घर की दीवारों पर पीली मिट्टी अथवा गोबर आदि से लीप-पोत कर सुंदर बनाते है। जनजाति समाज के अधिकांश झोपड़े टूटे अथवा तुवर काठी के झांझों से तैयार किए जाते है। जनजाति समाज वर्ग के झोंपड़े थोड़े व्यवस्थित और छतें कवेलु से ढकी होती है। उनके आवास गृहों में अब सीमेंट और टीन की चद्वरों का उपयोग होने लगा है तथा बाहरी दीवारों पर चित्रकारों द्वारा बनाए गए हनुमान, गणेश आदि के चित्र भी चित्रित किए देखे गए है।

आज भी जनजाति समाज के लोगों की आवास की स्थिति अच्छी नहीं है एवं आज भी इन लोगों के पास रहने के लिये अच्छे मकान की व्यवस्था नहीं है। इन लोगों के पास आज भी सुख सुविधाओं की कमी है, आर्थिक स्थिति बहुत की दयनीय होने के कारण इन लोगों के पास मकान की व्यवस्था नहीं है। इससे ज्ञात होता है कि आज भी इन लोगों के लिए सरकार के साथ-साथ गैर शासकीय संस्थाओं को इन जनजाति पर ध्यान देना अति आवश्यक है। जनजाति समाज में जो परिवार आर्थिक रूप से बेहतर है तथा नौकरी पेशा एवं व्यवसायी है वे स्वयं के मकान में निवास करते है, तथा जो परिवार किराये के मकान में निवास करते है वे शासकीय तथा निजी क्षेत्र में नौकरी करते पाये गये जबकि मजदूर तबके के व्यक्ति भी पाये गये जो किराये के मकान में रहते है।

#### पारिवारिक जानकारी -

परिवार एक आधारभूत सामाजिक संगठन है। संतान के जन्म से लेकर मृत्यु तक के उत्तरदायित्व परिवार में ही पूर्ण होते हैं। परिवार का मुख्य लक्ष्य रक्त समूहों की सुरक्षा करना तथा संतानोत्पत्ति है। परिवार में ही शिशु का जन्म और पालन पोषण होता है। परिवार मनुष्य की आधारभूत आवश्यकता है। जनजाति समाज के लोग एकल परिवार में रहना पसंद करते है। आज भी इन जनजाति समाज में परिवार का मुखिया पुरुष है जो कि अपने घर का मालिक होता है। इन परिवारों में आज भी पुरुष वर्ग समुदाय की प्राथमिकता अधिक देखने को मिली है।

### शिक्षा की स्थिति:-

किसी भी समाज को आगे बढ़ने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। कहाँ गया है कि “घर में एक रोटी कम खाओं, लेकिन बच्चों को अच्छी शिक्षा जरूर दो” जिससे की आने वाले समय में वह अपना भविष्य उज्ज्वल कर सके। इसके साथ ही आने वाली पीढ़ी समझदार हो, जागरूक, शिक्षित हो एवं व्यवस्थित हो। इसलिये इस शोध ग्रंथ के अंतर्गत शिक्षा की स्थिति को दर्शाना बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि इसके बिना जनजाति समाज की वास्तविक स्थिति को जानना बहुत ही मुश्किल होगा।

### व्यवसाय की स्थिति:-

किसी भी समाज की उन्नति का कारण उस समाज के द्वारा किये जाने वाले व्यवसाय, उद्योग एवं कार्य से संबंधित होता है। अधिकतर देखा गया है कि प्राचीन समय से लेकर वर्तमान तक हर समाज के द्वारा कुछ न कुछ व्यवसाय किया जा रहा है, जो कि उसकी उन्नति का कारण बना है। उसी प्रकार से जनजाति समाज के द्वारा भी कुछ छोटे-छोटे कुटीर एवं लघु उद्योग किये जाते हैं जो कि उस समाज की उन्नति का कारण बना है। साक्षात्कार के समय मेरे द्वारा देखा गया है कि आदिवासी समाज के द्वारा लघु उद्योग एवं कुटीर उद्योग को करते देखा है। इसके अलावा इस समाज के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि के साथ ही इन लोगों के द्वारा पशु पालन, मछली पालन एवं अन्य गृह उद्योग से संबंधित कार्यों को पूर्ण किया जाता है। इस प्रकार से जनजाति समाज के अधिकतर व्यक्ति या तो वे मजदूरी करते हैं या फिर अपना स्वयं का व्यवसाय, जो की उनकी उन्नति में सहायक हुआ है।

### कृषि कार्य-

जनजाति समाज में मुख्यतः किसान है और उनका परंपरागत व्यवसाय कृषि है। कुछ जनजाति समाज के श्रमिक मजदूरी का कार्य भी करते हैं। जनजाति समाज पहले ‘दाह दिया’ रीति से खेती करते थे। जिसमें समतल पेड़-पौधों से युक्त जमीन का चयन कर पेड़-पौधों को काट दिया जाता था और उसमें आग लगा दी जाती थी। जब राख की एक मोटी परत जमीन पर बिछ जाती थी, तो उसमें बीज बिखेर दिया जाता था। कभी-कभी इस जमीन को जोतकर भी बोवनी की जाती थी, तो कभी बिना जोते ही पानी बरसने का इंतजार किया जाता था। इस तरीक से वे जमीन पर पांच-छः फसलें लेते थे।

### सामाजिक स्थिति:-

प्रत्येक धर्म की अपनी एक सामाजिक स्थिति होती है। जो कि उसकी सामाजिक स्थिति को दर्शाती है, कि संबंधित व्यक्ति किस धर्म से आता है, उसका समाज कैसा है, और यही सब चीजे व्यक्ति को समाज में जोड़ती हैं। हर समाज किसी भी प्रकार का संबंध उसके समाज एवं रीति रिवाज के अनुसार करता है जो कि उसकी सामाजिक स्थिति का घटक माना है। इसी प्रकार से जनजाति समाज की भी अपनी एक सामाजिक स्थिति है जो की मुझे साक्षात्कार के दौरान प्राप्त हुई है।

### प्रकृति पूजा -

जनजातिय समाज के ग्रामों में प्रत्येक ग्राम में प्रकृति की पूजा का नियम शोधार्थी को देखने को मिला, अध्ययन क्षेत्र में कहीं-कहीं पर ऐसे जल स्रोत हैं जो अन्यत्र नहीं है। जैसे ग्राम बांकानेर जिला धार की सात मात्रा एक जल स्रोत

हैं इस जल स्रोत की बाकी छः बहनों में से एक नाला है। उसकी पूजा की जाती है अर्थात् प्रकृति द्वारा दिए गए संसाधनों की पूजा जनजातिय समाज द्वारा की जाती है।

### पूर्वज पूजा -

जनजातिय समाज में जो विशेषकर गाता की पूजा की जाती है। वह मुख्य रूप से पूर्वजों के लिए ही की जाती है, उनके गाते मृत्युपरांत बनाये जाते हैं। अनुसंधान सर्वेक्षण के समय ग्राम घडबोरी, विकासखण्ड बाग, जिला धार में गुलाबसिंह रावत के यहाँ पुत्र नहीं होने के कारण उन्होंने स्वयं अपना गाता बनवाया तथा उनकी दो लड़कियां एवं उनके बच्चे आज भी त्यौहारों के अवसर पर उस गाते का पूजन परंपरा के अनुसार करते हैं तथा हर त्यौहार में पूर्वज की पूजा की जाती है।

### वृक्ष पूजा -

धार क्षेत्र में कहीं-कहीं पर वृक्ष पूजा का प्रचलन देखने में आया है "देव वधीला-बाबा ढोंगर" की पूजा महाकाय वट वृक्ष के नीचे की जाती है। यह वट वृक्ष की पूजा भी दिपावली की चतुर्दशी को की जाती है। जिसे देव वधीला के नाम से जाना जाता है। ताड़, गेहूँ, ज्वार, मक्का, महुआ और अन्य वृक्ष की भी पूजा की जाती है।

### बली प्रथा -

जनजातिय समाज में बलिपूजा का महत्व प्रत्येक शुभ त्यौहार पर रहता है। चाहे वह बाबा देव की पूजा हो, देव वधीला की पूजा हो, भीलट देव की पूजा हो, गवालिया बाबा की पूजा हो, आदि पर विशेषरूप से बकरे की बली प्रथा का प्रचलन है। मुर्गे, अण्डे की बली भी दी जाती है कहीं पर मुर्गी के बच्चे के नाखून काटकर बली दी जाती है।

### बाबादेव पूजा -

जनजातिय समाज इसे अपना सबसे बड़ा देवता मानते हैं, और उसकी ग्राम देवता के रूप में पूजा करते हैं। 'बाबादेव' शाकाहारी हैं, अतः दिवस के समय दूध चावल या मक्का की खीर नए बर्तन में कुआरे (उपवास किए हुए) पुजारी के द्वारा तैयार कर 'बाबादेव' को चढ़ाई जाती है। यह कार्य ग्राम में सामूहिक तौर पर किया जाता है। दिवासा के दिन प्रत्येक परिवार का मुखिया उपवास रखता है। नई फसल मक्का के पकजाने पर सर्वप्रथम 'बाबादेव' को शाकाहारी भोजन एवं अन्य देवताओं को माँसाहारी भोजन (बकरा) चढ़ाया जाता है। जनजातिय समाज की मान्यता है कि 'बाबादेव' न केवल ग्राम की रक्षा करते हैं, बल्कि फसल की रक्षा भी करते हैं, और ग्राम के व्यक्तियों को धन धान से परिपूर्ण रखते हैं। 'बड़वा' जो 'बाबादेव' का प्रमुख पुजारी होता है, इसमें ही 'बाबादेव' की शक्तियाँ मौजूद रहती हैं। अपनी इन शक्तियों का प्रयोग करते हुए वह रोगियों का इलाज भी करता है।

### उतारा निकालना -

गायण के बाद उतारे के लिए मिट्टी की नई खापरी (रोटी सेंकने का मिट्टी का तवा) लाते हैं। सिके चने, सेव, नारियल, लोंग, इलायची, खारिक, बादाम, लोभान, मक्का का आटा पानी में भिगाकर कवेलू पर रखे कण्डे की अग्नि में डालते हैं। एक मुर्गा काटकर उसका खून भी खापरी में डालते हैं। कुछ शराब पहले खापरी में थोड़ी - थोड़ी पाँच बार डालते हैं। शराब पहले पाँच बार जमीन पर डालते हैं, बाद में खापरी में। बीमार को खटिया से उतारकर पूर्व दिशा की ओर मुँह करके खटिया के सहारे बैठा देते हैं। बड़वा उतारे को (खापरी को) बीमार की पीठ से लेकर सिर से पेट तक नौ बार उतारता है। फिर बड़वा उस उतारे को लेकर झोपले के बाहर तक जाता है। उसके बाद किसी आदमी को देकर

बताता है कि उस उतारे को कहाँ रखना हैं। एक आदमी उसके साथ जाता हैं। बड़वा घर की ओर वापस मुड़ता हैं, वह पीछे मुड़कर नहीं देखता हैं। बड़वा बता देता है कि उतारे को कहाँ रखना हैं। अगर जल भूत लगा था तो उस उतारे को जल में बहाने को कहता हैं। पंचा भूत था तो कुँआ या बावड़ी के पास रखने को बताता हैं। रणभूत था तो काकड़ पर रखने को कहता हैं।

#### निष्कर्ष

1. धार जिले में जनजातीय समुदाय की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में काफी परिवर्तन देखने को मिला है।
2. इनके परिवार का स्वरूप में इनके पास पक्के मकान अधिक मात्रा में देखने को मिला हैं साथ ही कुछ जनजातीय लोगों के पास कच्चे मकान भी उपलब्ध हैं।
3. जनजातीय समुदाय के लोगों के द्वारा कृषि कार्य अधिक मात्रा में किया जा रहा हैं, ये लोग कृषि कार्य काफी लम्बे समय से करते आ रहे हैं।
4. जनजातीय समुदाय के लोगों की सामाजिक स्थिति में काफी भिन्नता देखने को मिल रहा हैं, इन लोगों में आज भी अनेक प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियों को समाज में देखने को मिल रहा है।
5. जनजातीय समुदाय के लोगों के द्वारा अनेक माध्यमों से कृषि कार्य कर रहे हैं।

#### सुझाव

1. जनजातिय समुदाय के लोगों की आर्थिक स्थिति को सुधारने में लिए आये दिन नये-नये कदम उठाने होंगे, जिससे इनकी आर्थिक स्थिति में बदलाव होगा।
2. इन लोगों को शासकीय योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक मात्रा में देना होगा, जिससे ये लोग शासकीय सुविधाओं का लाभ ले सके।
3. वर्तमान समय में जनजातीय समुदाय के लोगों को सामाजिक स्तर में परिवर्तन करना होगा, जिससे ये लोग आज के परिवेश के अनुसार अपने आप को ढाल सके।
4. इन लोगों को अधिक से अधिक मात्रा में शिक्षित होना होगा।
5. इन लोगों को नवीन तकनीकियों को संसाधन का उपयोग करना चाहिए।

#### संदर्भ सूची

1. घोष के. (2007) झारखंड और पश्चिम बंगाल में अनुसूचित जनजातियों में शिक्षा के लैंगिक अंतर, समाजशास्त्रीय बुलेटिन, 56 (1) 109-125.
2. आर्चाय डब्ल्यू. जी (2020) द हिल्स ऑफ फ्लूट्स: आदिवासी भारत में जीवन में प्रेम और कविता: संथालों का एक चित्र- रूटलेज.
3. हेम्ब्रम ए आर, घोष, ए नायर, एस और मुर्मू, डी, (2016) संताल गांव में जीवन में एक दृश्य यात्रा, आदिवासी और स्वदेशी अध्ययन जर्नल (जेस) 3 (1), 17-36
4. आंजनेय अभिषेक तिवारी एंड योगेश कुमार यदुवंशी, मध्य प्रदेश की जनजातियां, एस चाँद पब्लिशिंग, © ईयर : 2024 ISBN : 9789358709414, 18-25